निम्नलिखित तीन रिपोर्टों का संकलन दिया गया है / Compilation of following three reports is given

(English translation is also given after every Hindi report)

1. बहुमंजिला फ्लैटों के निर्माण में लगे मजदूरों के बच्चों को बुनियादी हिंदी सिखाने पर एक रिपोर्ट - Year 2022

   A Report on basic Hindi teaching to children of labourers engaged in construction of multi-storied flats - Year 2022

2. एक रिपोर्ट: मजदूरों के बच्चों की सरकारी स्कूल में एडमिशन के बारे में - 27.12.2023

   A Report about admission of children of labourers in Govt. School - 27.12.2023

3. एक रिपोर्ट: मजदूरों के बच्चों की सरकारी स्कूल में एडमिशन के बारे में - 30.07.2024

   A Report about admission of children of labourers in Govt. School - 30.07.2024

रिपोर्टों के निष्कर्षों का सारांश अंत में दिया गया है / Summing up of findings of reports is given in the end .

(तीनों रिपोर्ट भगवंत सिंह रावत, ट्रस्टी , SBNJEAC ट्रस्ट द्वारा तैयार की गई हैं / All reports were prepared by Bhagwant Singh Rawat, Trustee-SBNJEAC Trust.)

बहुमंजिला फ्लैटों के निर्माण में लगे मजदूरों के बच्चों को बुनियादी हिंदी सिखाने पर एक रिपोर्ट।

परिचय: हमारे देश भारत में शहरों में बहुमंजिला फ्लैट बनाए जा रहे हैं और इन्हें पूरा होने में आमतौर पर 2-3 साल लग जाते हैं। निर्माण कार्य में लगे मजदूर काम पूरा होने के बाद नये स्थानों या नये शहरों में चले जाते हैं। इन मजदूरों के बच्चे, यदि उनके साथ रहते हैं, तो अक्सर स्कूल नहीं जाते हैं क्योंकि किसी भी स्थान पर उनके रहने की अवधि अधिक नहीं होती है; आम तौर पर एक या दो साल; अधिकतम तीन वर्ष.

SBNJEAC ट्रस्ट का उद्देश्य शैक्षिक गतिविधियों और गरीबों और जरूरतमंदों की मदद करना है। श्रमिकों के बच्चों को बुनियादी हिंदी का ज्ञान देने के लिए एक प्रायोगिक गतिविधि आयोजित की गई; इस उद्देश्य से कि बच्चों का स्तर निरक्षर श्रेणी से ऊपर उठाया जा सके।

चूंकि किसी कार्य स्थल पर मजदूरों का रहना अनिश्चित होता है, इसलिए उन्हें सीमित समय में शीघ्र हिंदी सिखाने का लक्ष्य रखा गया है।

संपन्न पृष्ठभूमि कार्य: एक निर्माणाधीन बहुमंजिला फ्लैट (सॉलिटेयर क्राउन (Solitaire Crown), आराधना गार्डन इलाका, GMS रोड, देहारदून) की पहचान की गई और उसके प्रबंधन/मालिकों, ठेकेदारों और मजदूरों से संपर्क किया गया। प्रबंधन द्वारा शाम के समय (6 से 7 बजे) बच्चों को पढ़ाने के लिए अपने कार्यालय के सामने एक छोटे से लॉन का उपयोग करने की अनुमति दी गई थी। उनकी मुख्य चिंता सुरक्षा थी यानी किसी भी अप्रिय दुर्घटना (निर्माणाधीन इमारत के ऊपर से गिरने वाली चीजें) से बच्चों को कोई नुकसान न हो क्योंकि मजदूर प्रबंधन के खिलाफ शिकायत/आपत्ति उठाते थे।

स्टेशनरी (नोटबुक, पेंसिल, इरेज़र और पेंसिल शार्पनर) खरीदी गईं। कुछ परिचित लोगों द्वारा कुछ प्रारम्भिक हिन्दी की बुनियादी पुस्तकें उपलब्ध करायी गयीं। एक मध्यम आकार का ब्लैकबोर्ड/चॉक खरीदा गया। यह भी निर्णय लिया गया कि प्रतिदिन कक्षा समाप्त होने के बाद बच्चों को कुछ खाने की चीजें (आमतौर पर बिस्कुट के पैकेट और कभी-कभी चॉकलेट या फ्रूटी प्रदान की जाती थी) प्रदान की जाएगी।

वास्तविक कार्य:शिक्षण गतिविधि 23 मई 2022 से शुरू की गई और 08 अगस्त 2022 तक संचालित की गई। ट्रस्टी भगवंत एस रावत द्वारा कक्षा शाम 6 से 7 बजे तक ली गई। रविवार को अवकाश रखा गया। चूंकि बच्चे अलग-अलग आयु वर्ग से थे, और उन्हें अलग-अलग तरीके से पढ़ाया जाना था, इसलिए उनकी गर्मी की छुट्टियों के दौरान पहले दो महीनों के लिए दो गरीब छात्रों (योगेश, कक्षा 9वीं पास और इंदर, कक्षा 12वीं पास) से भी मदद ली गई। प्रारंभ में, हिंदी अक्षरों को पढ़ना और लिखना सिखाया जाता था और फिर उच्च आयु वर्ग के लोगों को प्रतिदिन हिंदी पाठ/शब्दों का श्रुतलेख दिया जाता था।

पढ़ाए गए बच्चों के प्रदर्शन की रिपोर्ट अनुलग्नक 1 में दी गई है और कुछ बच्चों की तस्वीरें और हिंदी लेखन अनुलग्नक 2 में दिया गया है:

व्यय: अब तक का शुद्ध व्यय लगभग ₹10000 है, जिसमें से ₹3000/= ट्रस्ट फंड से इंदर/योगेश को बैंक चेक के माध्यम से भुगतान किया गया है। अन्य सभी व्यय ट्रस्टियों के निजी कोष से वहन किये जा रहे हैं।

निष्कर्ष और सीख:

1. बच्चों को साक्षर बनाने (केवल मूल हिंदी का ज्ञान) का यह मॉडल गरीबों की मदद करने में रुचि रखने वाले शिक्षित लोगों द्वारा बहुत कम खर्च के साथ कहीं भी स्वतंत्र रूप से अपनाया जा सकता है।

2. 6 वर्ष और उससे अधिक उम्र के बच्चे आमतौर पर चीजों को तेजी से सीखते हैं और ठीक से लिख भी सकते हैं। छोटे बच्चे हिंदी अक्षरों को पहचान सकते हैं लेकिन उन्हें ठीक से लिखने के लिए अधिक समय की आवश्यकता होगी और इसलिए समय सीमित होने पर हिंदी पढ़ाना मूल रूप से 6 वर्ष से ऊपर के बच्चों तक ही सीमित होना चाहिए।

3. तेजी से सीखने के लिए बच्चे की स्वार्थ/बुद्धिमत्ता महत्वपूर्ण है।

4. कुछ माता-पिता अपने बच्चों को सरकारी स्कूलों में भेजने के प्रति उदासीन होते हैं।

5. गतिविधि से बच्चों को लाभ हुआ है हालाँकि, यह किसी भी तरह से स्कूल का विकल्प नहीं है, जहाँ बच्चे कई अन्य विषयों/गतिविधियों को सीखते हैं, पढ़ाई के लिए अधिक समय तक रहना सीखते हैं और बच्चों/शिक्षकों के एक बड़े समूह के साथ बातचीत करने का लाभ उठाते हैं।

आभार:

हम इस कार्य में सहायता के लिए निम्नलिखित व्यक्तियों को धन्यवाद देना चाहते हैं (नाम प्राप्त सहायता के क्रम में रखे गए हैं)

1. श्री वर्मा और सॉलिटेयर क्राउन की प्रबंधन टीम: हमारे उद्देश्य की सराहना करने और मजदूरों को बच्चों को हमारी कक्षा में भेजने के लिए राजी करने के लिए, और बाद में हमें बरसात के मौसम में बच्चों को पढ़ाने के लिए एक कार्यालय कक्ष की अनुमति देने के लिए।

2. श्री रवीन्द्र राणा को बच्चों के शिक्षण हेतु प्रारम्भिक हिन्दी पुस्तकें उपलब्ध कराने हेतु

3. श्रीमती नौटियाल, गैलेक्सी हाइट्स - फ्लैट की एक महिला : बच्चों को स्केच बुक, किताबें और रंग और उपहार प्रदान करने के लिए।

4. श्रीमती नीता कांडपाल, आईआरडीई (डीआरडीओ): बच्चों के लिए किताबें, कपड़े और दो स्कूल बैग उपलब्ध कराने के लिए

5. श्री कृष्ण कुमार अरोड़ा, एक सामाजिक कार्यकर्ता: बच्चों को कहानी की किताबें, स्केच किताबें और रंग उपलब्ध कराने के लिए। उन्होंने स्कूलों में बच्चों के प्रवेश के लिए सरकारी और अर्ध-सरकारी स्कूलों से भी संपर्क किया। हालाँकि, यह केवल इसलिए नहीं किया जा सका क्योंकि माता-पिता अपने बच्चों को स्कूल भेजने के इच्छुक नहीं थे

6. श्रीमती तान्या रावत: बच्चों के लिए नाश्ता उपलब्ध कराने में आर्थिक सहायता के लिए

A Report on basic Hindi teaching to children of labourers engaged in construction of multi-storied flats.

Introduction: In our country, India, multi-storied flats are being built in cities and it generally takes 2-3 years for their completion. Labourers engaged in construction work shift to new locations or new cities after the completion of work. Children of these labourers, if staying with them, often don't go to school for their stay at any location is not long; generally one or two years; maximum three years.

SBNJEAC Trust objective is for educational activities and helping poor and needy. An experimental activity was conducted to impart knowledge of basic Hindi to the children of labourers; with the aim that the level of children can be raised above the illiterate category.

As the stay of the labourers in a working site is rather uncertain, the aim has been kept in teaching them Hindi quickly in limited time.

Background work: A multi-storied flat under construction (Solitaire Crown, Aradhana Garden locality, GMS Road, Dehardun) was identified and its management/owners, contractors and labourers were contacted. Permission was given by the Management to make use of a small lawn in front of their office for teaching children during evening time (6 to 7 PM). Their main concern was safety i.e. no harm to come to children from any untoward accident (things falling from top of the building under construction) as the labourers would raise complaint/objection against the management.

Stationary (notebooks, pencils, erasers and pencil sharpners) were purchased. Few elementary Hindi basic books were offered by some known people. A medium size blackboard / chalks were procured. It was also decided to provide some eatables (normally biscuits packets and few times, chocolates or frooti were provided) to kids daily after the end of class.

Actual work: The teaching activity was initiated from 23rd May 2022 and conducted till 08th Aug 2022. Class was taken from 6 to 7 in the evening, by the trustee, Bhagwant S Rawat. Sunday was kept as holiday. As the children were from varying age group, and had to be taught differently, help was also taken for first two months from two poor students (Yogesh, Class 9th pass and Inder, class 12th Pass) during their summer vacation. Initially, reading and writing of Hindi letters was taught and then to higher age group, dictation of Hindi Text/words was given daily.

A report of the performance of the children taught is given in Annexure 1 and the photographs and Hindi writing of some children is given in Annexure 2:

Expenditure: Net expenditure till date is around ₹10000 of which ₹3000/= paid to Inder/ Yogesh from Trust fund through bank cheque. All other expenditure is being borne by personal fund of Trustees

Lessons/observations:

1. This model of making children literate (knowledge of basic Hindi only) can be followed independently anywhere with very less expenditure by educated people interested in helping poor.

2. Children of age 6 and above have generally faster pick up to learn things from scratch and can also write properly. Small children can recognize Hindi letters but they will need much more time to write properly and hence teaching Hindi should be basically restricted to children above 6 years, when the time is limited.

3. Self-interest/IQ of a child is important for faster learning.

4. Some parents are rather apathetic to send their children to even govt. schools.

5. The activity has benefitted children. It is however, in no way, substitute for school, where the children learn number of others subjects/activities, learn to put up for longer hours for studies and have benefit of interacting with a much larger group of children/ teachers.

Acknowledgements:

We would like to thank following individuals for their help in this activity (Names put in order of help received)

1. Mr Verma and the management team of Solitaire Crown: For appreciating our aim and persuading the labourers to send the children to our class, and also later allowing us an office room for teaching children during rainy season.

2. Mr Ravindra Rana for providing preliminary Hindi books for the teaching of children

3. Ms Nautiyal, a lady from the neighbouring flat building 'Galaxy Heights': For providing sketch books, books, and colors and gifts to the children.

4. Ms Neeta Kandpal, IRDE (DRDO) : For providing books, clothes and two school bags for the children

5. Mr Krishan Kumar Arora, A social activist: for providing storybooks, sketch books and colors to the children. He also contacted govt and semi-govt schools for admission of the kids in the schools. However, it could not be done simply because parents were not willing to send their children to schools

6. Ms Tanya Rawat: for monetary help in providing snacks for children

अनुलग्नक1 / Annexure 1

Sr No.	बच्चों का विवरण / Details of Children	हिंदी शिक्षण में प्रदर्शन पर बच्चों की रिपोर्ट का विवरण अन्य टिप्पणियाँ / Report on performance in Hindi teaching	अन्य **टिप्पणियाँ**/ / Other Remarks
1.	संतोषी पुत्री बलराम (पर्यवेक्षक) उम्र: 12 साल मूल स्थान: अनंतपुरा बहेड़ा (यूपी/एमपी बॉर्डर) Santoshi d/o Balram(Superviser) Age: 12 years Native place: Anantpura Beheda (UP/MP border)	- संतोषी अपने गांव के स्कूल से 5वीं क्लास पास है, लेकिन कोविड के कारण पिछले दो साल से स्कूल नहीं जा रही है। - पूर्व ज्ञान और अधिक उम्र के कारण उनका पिकअप अच्छा था। - वह मानती हैं कि ट्रस्ट की पढ़ाई उनके लिए काफी फायदेमंद रही है। - हालांकि अब हिंदी में पढ़ और लिख सकते हैं, प्रवाह केवल अभ्यास से ही आ सकता है और फिर भी लिखते समय गलतियां हो जाती हैं। - उसकी लिखावट अच्छी है। - Santoshi is 5th class pass from her village school, but has not been going to school for last two years due to Covid. - Her pickup was good due to prior knowledge and higher age. - She admits that the teaching by the Trust has been very beneficial to her. - Can now read and write in Hindi though, fluency can come only with practice and still make mistakes while writing. - Her handwriting is good.	- स्केचिंग में **अच्छी** -एक सामाजिक कार्यकर्ता श्री कृष्ण कुमार अरोड़ा द्वारा रुचि लेने के कारण, पास के अर्ध-सरकारी में उसके प्रवेश की **औपचारिकताएं** पूरी की जा रही थीं, लेकिन उसके माता-पिता उत्सुक नहीं थे, इसलिए मामला बंद कर दिया गया। - अंकगणित (जोड़, घटाव, गुणा और भाग) का **ज्ञान** हो - अंग्रेजी बोलने में रुचि है और अंग्रेजी में नाम लिखना भी आता है - Good in sketching -Due to interest taken by a social worker Mr Krishan Kumar Arora, formalities for her admission in a nearby semi- govt were being done but as her parents were not keen, the matter was closed. - Possessed knowledge of arithmetic (addition, subtraction, multiplication and division) - Interested in English speaking and also knows to write name in English
2.	विशाल पुत्र हरि किशोर पासवान उम्र 10 साल मूल स्थान: सीतामढी, बिहार Vishal s/o Hari Kishore Paswan Age 10 years Native place: Sitamarhi, Bihar	- विशाल तीसरी कक्षा पास है, लेकिन दो साल से स्कूल नहीं जा रहा, क्योंकि स्कूल काफी दूर है। - पहले से जानकारी होने के कारण उनका पिकअप बेहतर था - वे मानते हैं कि ट्रस्ट से हिंदी सीखना उनके लिए बहुत फायदेमंद रहा है - हालांकि अब हिंदी में पढ़ और लिख सकते हैं, प्रवाह केवल अभ्यास से ही आ सकता है और फिर भी लिखते समय गलतियां हो जाती हैं। - साफ़ लिखावट. - Vishal is class 3 pass but not going to school for over two years as the school is quite far.. - His pick up was better due to prior knowledge - He admits that Hindi learning from trust has been very beneficial to him - Can now read and write in Hindi though, fluency can come only with practice and still make mistakes while writing. - Fair handwriting.	- दुर्भाग्य से मोबाइल पर गेम्स का शौकीन है - सेना में शामिल होना चाहता है। – अंग्रेजी बोलने में रुचि - Unfortunately is fond of games on mobile - wants to join Army. - Interested in English speaking
3.	विवेक उम्र: 8 साल (विशाल का भाई) Vivek Age: 8 years (brother of Vishal)	- उनका कहना है कि वह स्कूल नहीं गए, लेकिन पारिवारिक प्रभाव के कारण उन्होंने हिंदी अक्षर तेजी से सीख लिए - हालांकि अब हिंदी में पढ़ और लिख सकते हैं, प्रवाह केवल अभ्यास से ही आ सकता है और फिर भी लिखते समय गलतियां हो जाती हैं। - प्रारंभिक चरण से बहुत अच्छा सुधार दिखा है। - अच्छी लिखावट. - He says has not gone to school, but picked up Hindi letters fast due to family influence - Can now read and write in Hindi though,	- दुर्भाग्य से मोबाइल पर गेम्स का शौकीन है - अंग्रेजी में भी रुचि है और अंग्रेजी में नाम लिखना भी आता है - Unfortunately is fond of games on mobile - Interested in English also and knows to write name in English

		fluency can come only with practice and still make mistakes while writing. - Has shown very good improvement from initial stage. - good handwriting .	
4.	सुगंधा (विशाल की बहन) उम्र: 7 साल Sugandha (Sister of Vishal) Age: 7 years	- स्कूल नहीं गई, लेकिन पारिवारिक प्रभाव के कारण हिंदी अक्षरों का ज्ञान कम था। - हालांकि अब हिंदी में पढ़ और लिख सकते हैं, प्रवाह केवल अभ्यास से ही आ सकता है और फिर भी लिखते समय गलतियां हो जाती हैं। - अच्छी लिखावट. - Has not gone to school, but had little knowledge of Hindi letters due to family influence . - Can now read and write in Hindi though, fluency can come only with practice and still make mistakes while writing. - Good handwriting.	- स्केचिंग पसंद है - loves sketching
5.	रासिल पुत्र सबिकुल और रशीदा उम्र: 8 साल मूल स्थान:बिहार Rasil s/o Sabikul & Rashida Age: 8 years Native place:Bihar	- हिंदी का पहले से कोई ज्ञान नहीं था और शून्य से सीख रहा था - स्व-रुचि और अधिक उम्र के कारण कक्षा में बेहतर प्रदर्शन किया। - एक महीने बाद जब वे हिंदी में शब्द बनाने के प्रारंभिक चरण में थे, तब उन्होंने छोड़ दिया। - Had no prior knowledge of Hindi and was learning from scratch - Was better performer in class due to self-interest and higher age. - He left after one month when he was in initial stage of forming words in Hindi.	
6.	मनीष पुत्र बिरजू उम्र: 8 साल मूल स्थान: बिहार Manish S/o Birju Age: 8 years Native place: Bihar	- कुछ पूर्व ज्ञान था और ईमानदार बच्चा था - डेढ़ महीने बाद छोड़ा जब वह हिंदी में शब्द और वाक्य बना सके। बेहतर प्रदर्शन करने वाला था. - एक अच्छा विद्यार्थी था और हिन्दी अक्षर सीख रहा था। डेढ़ माह बाद छोड़ दिया। - Had some prior knowledge and was sincere child - Left after one and half month when he could make words and sentences in Hindi. Was a better performer.	
7.	रागिनी , मनीष की बहन उम्र: 7 साल मूल स्थान: बिहार Ragini, sister of Manish Age: 7 years Native place: Bihar	- एक अच्छी छात्रा थी और हिन्दी अक्षर सीख रही थी । डेढ़ माह बाद छोड़ दिया। - Was a good student and learning Hindi letters. Left after one and half months.	
8.	राहुल कुमार पुत्र आसनु उम्र: 5 साल मूल निवासी: बिहार Rahul Kumar s/o Asanu Age: 5 years Native: Bihar	-शुरूआत से सीखना. अक्षर सीख लिया है और छोटे-छोटे शब्द बनाना सीख रहा है। - ईमानदार - अच्छी लिखावट. - learning from scratch. Has learnt letters and is learning to make small words. - sincere - Good handwriting.	-सरकारी स्कूल में उनके प्रवेश के लिए श्री अरोड़ा ने **प्रयास** किया था, लेकिन उनके पिता की रुचि की कमी के कारण ऐसा नहीं हो सका। - साहिल के साथ नियमित रूप से छोटी-छोटी लड़ाइयां होती रहीं और दो को अलग होना पड़ा -His admission in govt school was pursued by Mr Arora but could not materialize due to lack of interest from his father. -There were regular brief fights with Sahil and two had to be separated

9.	रितु. राहुल कुमार की बहन उम्र; 4 साल Ritu Sister of Rahul Kumar Age; 4 years	शुरुआत से सीखना. कुछ हिन्दी अक्षरों को पहचानना या पहचानना। लेकिन लगता है कि ठीक से लिखने के लिए अभी भी वह बहुत छोटा है और इसलिए उसे अभी गंभीरता से समय नहीं दिया गया है। Learning from scratch. Able or identify some Hindi letters. But seems still too young to write properly and hence not given serious time presently.	क्लास में **स्केचिंग** भी करती हैं Also does sketching in class
10.	साहिल पुत्र उम्र: 5 साल 10 महीने मूल निवासी: छत्तीसगढ़ Sahil s/o Age: 5 years 10 months Native: Chattishgarh	-शुरुआत से सीखना. -छोटे-छोटे शब्दों को सही ढंग से पढ़ने में निपुण हो गए हैं। - लिखने में अच्छा नहीं और कुछ अक्षर ही ठीक से लिख पाता है। या सिर्फ एक महीना. Learning from scratch. -Has become good in reading small words correctly. - Not good at writing and can write properly only some letters.	- वह कुशाग्र **शिक्षार्थी** है, लेकिन उसे कक्षा के **अन्य** बड़े बच्चों (कक्षा के बाहर) द्वारा भी पढ़ाया जाता था, जो उसके पास रहते थे - Is sharp learner but was also taught by other elder children of the class(outside the class) who were staying near him
11.	हंसी पुत्री अमीनूर और जमीला आयु: <6 वर्ष मूल स्थान: बिहार Hansi D/o Aminoor & Jamila Age: < 6 years Native place: Bihar	शुरुआत से सीखना. अनेक हिन्दी अक्षरों को पहचानना या पहचानना। लेकिन लगता है कि ठीक से लिखने के लिए अभी वह बहुत छोटा है और इसलिए उसे गंभीरता से समय नहीं दिया गया Learning from scratch. Able or identify several Hindi letters. But seems still too young to write properly and hence not given serious time presently.	क्लास में **स्केचिंग** भी करती हैं Also does sketching in class
12.	ख़ुशी, हंसी की जुड़वां बहन Khus,i Twin sister of Hansi	शुरुआत से सीखना. अनेक हिन्दी अक्षरों को पहचानना या पहचानना। लेकिन लगता है कि ठीक से लिखने के लिए अभी वह बहुत छोटा है और इसलिए उसे गंभीरता से समय नहीं दिया गया Learning from scratch. Able or identify several Hindi letters. But seems still too young to write properly and hence not given serious time present	क्लास में **स्केचिंग** भी करती हैं Also does sketching in class
13.	आशीष उम्र: 6-7 साल Ashish Age: 6-7 years	- केवल एक महीने के लिए वहां था. - हिंदी अक्षर तेजी से सीखने वाले थे और अच्छी रुचि रखते थे - Was there for only one month. - Was a fast learner of Hindi letters and had good self-interest	जन्म से ही आंखों की समस्या. पीजीआई से इलाज करा रहे हैं Eye problem from birth. Getting treatment from PGI
14.	रुसिका पुत्री धारू उम्र: 6 साल मूल स्थान: नेपाल Rusika d/o Dharu Age: 6 years Native place: Nepal	20 जुलाई को क्लास ज्वाइन की। पत्र लिखने और पढ़ने में अच्छी पकड़ है। ऐसा लगता है कि वह अन्य छोटी लड़कियों की तुलना में बहुत तेजी से सीख सकती है। Joined class on 20th July. Has good pickup in writing and reading letters. Seems she can learn much faster than other younger girls.	--

उपरोक्त बच्चों के अलावा, दो बच्चे दो दिनों के लिए **कक्षा** में उपस्थित हुए लेकिन फिर चले गए। (संभवतः उनके माता-पिता **स्थानांतरित** हो गए)।
इसके अलावा, 8वीं कक्षा में पढ़ने वाला एक अन्य लड़का, श्रीधर और विशाल का बड़ा भाई भी कक्षा में बच्चों की मदद करता था। बदले में उन्हें अंग्रेजी बोलना थोड़ा सिखाया गया / In addition to above children, two children attended the class for two days but then left.(Most likely their parents shifted)..Also, another boy, Shridhar, studying in class 8th and elder brother of Vishal, also helped children in class. He was in turn taught a bit on English speaking.

बच्चे अपने शिक्षक इंदर के साथ। / hildren with their teacher, Inder

शिक्षक योगेश को उनके अंतिम दिन गुलदस्ता भेंट किया गया / Yogesh, the teacher being presented a bouquet on his last day

बगीचे में बच्चों द्वारा सजाया गया एक फूल का गमला / A flower pot in the garden decorated by children

बच्चों के साथ श्री कृष्ण कुमार अरोड़ा / Mr Krishan Kumar Arora with kids

बच्चों की कक्षा./ Children Class

इन टिन शेड वाले कमरों से पांच बच्चे आए /Five kids came from these tin shade rooms

हंसी अपने घर के बाहर झूले में / Hansi in a swing outside her house

निर्माणाधीन बहुमंजिला फ्लैट जहां इन बच्चों के माता-पिता काम करते हैं / The multi-storied flat

बच्चों से कहा गया कि कुछ लिखकर दो। उन्होंने यही लिखा है

Children were told to give something in writing. This is what they have written

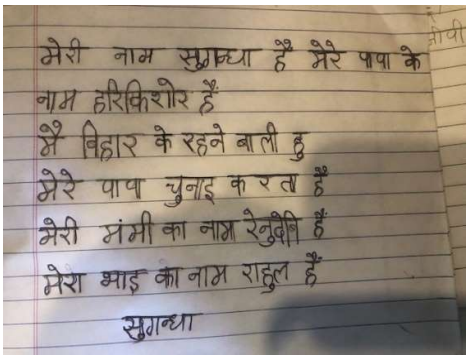

मेरी नाम सुगन्धा हैं मेरे पापा के
नाम हरिकिशोर हैं
मैं बिहार के रहने बाली हु
मेरे पापा चुनाइ करता हैं
मेरी मंमी का नाम रेनुदेवी हैं
मेरा भाइ का नाम राहुल हैं
सुगन्धा

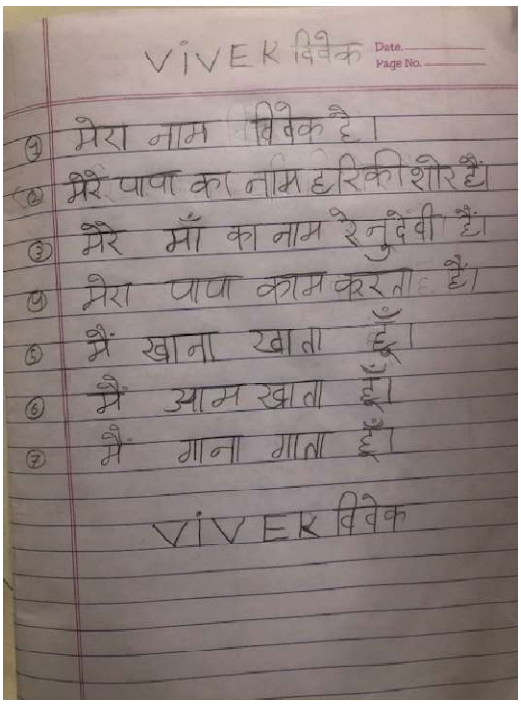

VIVEK विवेक

1. मेरा नाम विवेक है।
2. मेरे पापा का नाम हरिकीशोर है।
3. मेरे माँ का नाम रेनुदेवी है।
4. मेरा पापा काम करता है।
5. मैं खाना खाता हूँ।
6. मैं आम खाता हूँ।
7. मैं गाना गाता हूँ।

VIVEK विवेक

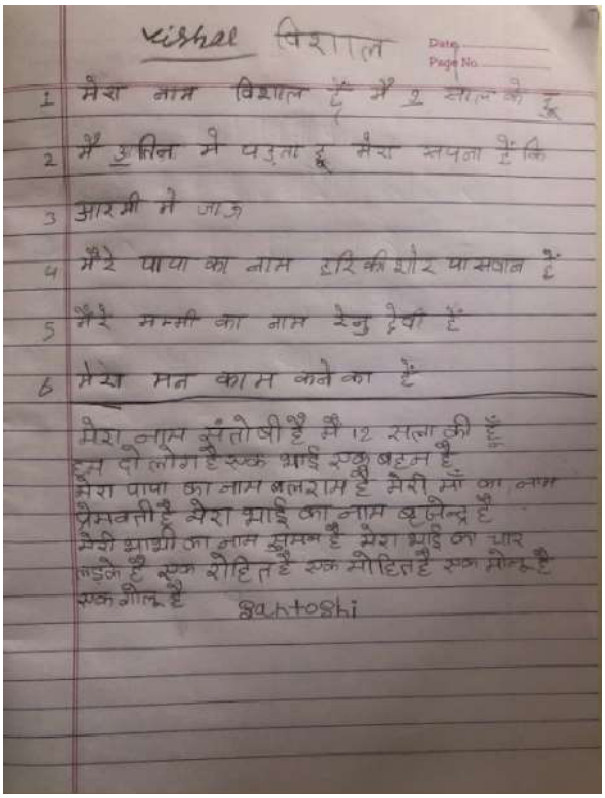

vishal विशाल

1 मेरा नाम विशाल है मैं 2 साल की हू
2 मैं आँगन मे पढ़ता हू मेरा सपना है कि
3 आरमी मे जाऊ
4 मेरे पापा का नाम हरिकीशोर पासवान है
5 मेरे मम्मी का नाम रेनु देवी है
6 मेरा मन काम करने का है

मेरा नाम संतोषी है मै 12 साल की हूँ
हम दो लोग है एक भाई एक बहन है
मेरा पापा का नाम बलराम है मेरी माँ का नाम
प्रेमवती है मेरा भाई का नाम बृजेन्द्र है
मेरी भाभी का नाम सुमन है मेरा भाई का चार
लड़के है एक रोहित है एक मोहित है एक मोनू है
एक गोलू है santoshi

एक रिपोर्ट : मजदूरों के बच्चों की सरकारी स्कूल में एडमिशन के बारे में

(A Report about admission of children of labourers in Govt. School)

Date: 27.12.2023

Report in English after Hindi

द्वारा भगवन्त सिंह रावत, ट्रस्टी, SBNJEAC Trust,

By Bhagwant S Rawat, Trustee, SBNJEAC Trust

(Webite: www. sbnjeact.org)

उत्तराखंड राज्य में 5वीं कक्षा तक के बच्चों के लिए राज्य के सरकारी स्कूल में मुफ्त शिक्षा प्रदान की जाती है। इन स्कूलों में बच्चों को मुफ्त भोजन दिया जाता है और सप्ताह में एक बार दूध और फल भी मुफ्त दिए जाते हैं। बैंक में बच्चे का बचत खाता खोला जाता है, जहां सरकार द्वारा बच्चे के खाते में जूते, किताबें, वर्दी आदि के लिए पैसे ट्रांसफर किए जाते हैं।

बहुमंजिला इमारतों के निर्माण कार्य में लगे राज्य के बाहर या भीतर के गरीब मजदूर अज्ञानतावशऔर स्कूल अधिकारियों से संपर्क करने में झिझक के कारण इस सुविधा का लाभ अक्सर नहीं उठा पाते हैं। प्राथमिक स्कूल में भी न जाने के कारण उनके बच्चे बुनियादी शिक्षा से भी वंचित हो रहे है। इस प्रकार यह बच्चे अनपढ़ की श्रेणी में आ जाते हैं।

श्री भैरवनाथजी एजुकेशनल एंड कल्चरल ट्रस्ट ने, जो कि एक चैरिटेबल ट्रस्ट है और इसमें 80G के तहत आयकर छूट है, देहरादून में एक राजकीय प्राथमिक विद्यालय और इन मजदूरों के एक समूह के साथ इस मामले पर चर्चा की।

स्कूल में प्रवेश पाने के लिए बच्चे के जन्म प्रमाण पत्र की प्रतियां, माता-पिता का आधार कार्ड और बच्चे और माता-पिता की पासपोर्ट आकार की फोटो की आवश्यकता होती है। साथ ही बच्चे का खाता खोलने के लिए बैंक को आधार कार्ड की भी आवश्यकता होती है। प्रवेश आम तौर पर मार्च से नया सत्र शुरू होने पर और सितंबर महीने तक किया जा सकता है।

इन मजदूरों के लिए सबसे बड़ी समस्या अपने बच्चों का जन्म प्रमाण पत्र बनवाना है. जन्म प्रमाण पत्र देहरादून में नगर निगम द्वारा जारी किया जाता है और यदि कोई एक वर्ष के अंतराल के बाद जन्म प्रमाण पत्र के लिए आवेदन कर रहा है, तो नगर निगम की

दो मुख्य आवश्यकताएं होती हैं (i) बच्चे के टीकाकरण कार्ड की प्रतिलिपि (ii) आवासीय सबूत की प्रतिलिपि ।

टीकाकरण कार्ड राज्य के आशा (* ASHA - **A**ccredited **S**ocial **H**ealth **A**ctivist) कार्यकर्ताओं के समन्वय से सरकारी नियंत्रित चिकित्सा केंद्रों द्वारा प्रदान किया जाता है। आशा कार्यकर्ताओं का एक कार्य अपने क्षेत्रों की गरीब गर्भवती महिलाओं पर नज़र रखना और उन्हें इस चरण के दौरान बुनियादी चिकित्सा सहायता/दवाएँ प्रदान करना और नवजात शिशु के लिए टीकाकरण की जानकारी प्रदान करना है। लेकिन, मजदूर वर्ग के लोगों में जागरूकता की कमी और उनके रोज के ठेकेदार के काम में फंसी दिनचर्या के कारण, ये मजदूर आशा कार्यकर्ताओं के संपर्क में नहीं आ पाते हैं और अपने बच्चों के लिए टीकाकरण कार्ड प्राप्त नहीं कर पाते हैं। साथ ही उनके बच्चे अस्पताल में कम ही पैदा होते हैं, जँहा से प्राप्त जन्म मृत्यु की सूचना को नगर निगम वैध मानता है। ऐसे मजदूर भी हो सकते हैं जो दूसरे राज्यों में अपने बच्चों के जन्म के बाद बिना उनका टीकाकरण कराए उत्तराखंड आ गए हैं।

इन मजदूरों के सामने दूसरी समस्या यह है कि नगर निगम कार्यालय को आवासीय प्रमाण पत्र, जैसे कि मालिक का आधार कार्ड के साथ बिजली बिल, की आवश्यकता होती है। चूंकि मजदूर अस्थायी आवास में रहते हैं, इसलिए वे कोई बिजली/पानी का बिल देने की स्थिति में नहीं होते हैं और इन आवासों के मालिक इस संबंध में मददगार नहीं होते हैं। ऐसे में ये मजदूर निवास प्रमाण पत्र हासिल करने की स्थिति में नहीं हैं।

ये दोनों मुख्य समस्याएं हैं और नगर निगम और सम्बंधित सरकारी विभागों को इनसे निपटने की जरूरत है। हमारे देश के किसी भी राज्य के बच्चे बुनियादी शिक्षा के अधिकार के हकदार हैं। इसके अलावा, एक चिकित्सा केंद्र कार्यकर्ता ने अपने केंद्र में टीकाकरण कार्ड की उपलब्धता में कमी की भी सूचना दी।

साथ रह रहे मजदूरों के पूरे समूह में से केवल तीन मजदूरों के बच्चों (तीनों लड़कियों) के पास ही आधार कार्ड था, (जिसमें भी जन्म तिथि अंकित होती है), ट्रस्ट इन तीन लड़कियों को सरकारी स्कूल में दाखिला दिलाने में कामयाब हो सका।

ट्रस्ट ने स्कूल और मजदूरों के बीच सिर्फ एक सेतु के रूप में काम किया, क्योंकि मजदूर स्वयं सीधे स्कूल जाने से झिझकते थे। इस दाखिला पद्धति को समाज के अन्य संपन्न लोगों द्वारा इन लोगों के कल्याण के लिए अपनाया जा सकता है। प्रवेशित तीन बच्चों का विवरण तस्वीरों सहित अनुबंध 1 में दिया गया है।

इस कार्य के लिए ट्रस्ट फंड से कोई वित्त उपयोग नहीं किया गया। तीन लड़कियों को प्रोत्साहन देने के लिए, ट्रस्टी भगवन्त सिंह रावत ने प्रवेश संबंधी और बैंक का बचत

खाता संबंधी औपचारिकताएं पूरी होने के बाद बच्चों के लिए कुछ स्कूल स्टेशनरीऔर मिठाइयां खरीदने में अपने कुछ निजी पैसे खर्च किए।

SBNEAC ट्रस्ट, देहरादून के राजकीय प्राथमिक विद्यालय, माजरा, की प्रधानाचार्या और शिक्षिकाओं को उनके स्कूल में बच्चों के प्रवेश में मदद के लिए धन्यवाद देना चाहता है।

जाँच - परिणाम:

1. मजदूरों के कई बच्चे सरकारी स्कूल में दाखिला लेने के इच्छुक हैं, उनके माता-पिता उन्हें स्कूल भेजने में रुचि रखते हैं और स्कूल के शिक्षक भी इन बच्चों को अपने स्कूल में लेने के इच्छुक हैं, लेकिन मुख्य रूप से नगर निगम से जन्म प्रमाण पत्र प्राप्त करने में कठिनाई के कारण ये बच्चे, ये बच्चे स्कूल नहीं जा पा रहे हैं. बैंक खाता खोलने और मुफ्त स्कूल सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए, इन बच्चों के पास आधार कार्ड भी होना चाहिए, जिसको बनाने के लिए भी जन्म प्रमाण पत्र की आवश्यकता होती है।

2. मजदूरों के बच्चों को सरकारी स्कूलों में प्रवेश दिलाने और इस प्रकार देश में निरक्षरता को कम करने की समस्या से प्रभावी ढंग से निपटा जा सकता है यदि समाज के संपन्न लोग अपने क्षेत्रों में काम करने वाले इन लोगों की मदद और मार्गदर्शन के लिए आगे आएं। इसमें केवल नैतिक समर्थन की आवश्यकता है, किसी वित्तीय सहायता की नहीं।

****

A Report about school admission of children of labourers engaged in construction work for multi-storeyed building

In Uttarakhand state, free education is provided in state government school for children up to 5th class. In these schools free meals are provided to the children and milk and fruits are also given once in a week. A saving account of the child is opened in a Bank, where the money is transferred in child's account by the govt for shoes, books, uniform etc.

Poor labourers from outside or within the state engaged in construction work of mulit-storeyed buildings rarely avail this facility due to lack of knowledge and hesitation in approaching the school authorities. As these children are unable to attend even a primary school, they get deprived of even the basic education. Thus these children get in the category of illiterates.

Shri **B**hairav**N**ath**J**i **E**ducational **A**nd **C**ultural **T**rust (SBNEACT), a chairtable Trust with income-tax exemption under 80G, discussed the matter with a primary government school and a group of these labourers in Dehradun.

School requires copies of birth certificate of the child, aadhar card of a parent and passport size photos of child and parent for the admission. Also Adhar card is needed by the bank for opening the child's account. The admission can be generally done from March when a new session starts and up to the month of September.

For these labourers, the biggest problem is in getting a birth certificate for their children. Birth certificate is issued by Municipal Corporation, in Dehradun and if one is applying for the birth certificate after a gap of one year, the two main requirements of Municipal Corporation are (i) copy of Vaccination card of the child (ii) copy of residential proof.

Vaccination card is provided by many government controlled medical centres in co-ordination with the ASHA* (Accredited Social Health Activist) workers of the state. One area of work of these workers is to keep a lookout for poor pregnant women of their areas and provide them basic medical aid/ medicines during this phase and provide vaccination information for the new born child. However, because of lack of awareness within the labourer class of people and also because of their tight daily routine of working schedule under a contractor, these labourers are not able to come in contact with Asha workers and get the vaccination card for their children. Also their children are seldom born in a hospital, a place from where birth information paper can be considered as a valid document by the Municipal Corporation. There can also be labourers who have migrated to Uttarkahand after birth of their children in other states and without getting vaccination card from there.

Second problem these labourers face is that a residential proof, such as electricity bill of the owner along with owner's Aadhar card copy is required by the Municipal Corporation office. However, as the labourers live in a makeshift accommodation they are not in a position to provide any electricity/water bill and the owners of these accommodations are not helpful in this regard. Hence, these labourers are not in a position to get a residence proof.

These two are main problems and need to be tackled by the Municipal Corporation and concerned government departments. Children belonging to

any state of our country deserve the right to basic education. Besides this, a medical centre worker also reported scarcity in availability of Vaccination cards in their centre.

As only three labourers' children (all girls) had aadhar card, (wherein date of birth is indicated) of the entire group of the labourers living together, the Trust could manage to get these three girls admitted in a government school. The Trust worked solely as a bridge between school and labourers, for labourers on their own were hesitant to approach the school directly. This admission approach can be applied by other well-to-do people of the society for welfare of these people. The details of the three children admitted are given in Annexure 1 along with photographs.

No Finance from Trust fund was utilized for this activity. Just as an encouragement gesture to the three girls, some personal money was spent by Trustee Bhagwant S Rawat in buying basic stationary and sweet for the children after their admission and bank account formality was completed.

The Trust would like to thank Principal and teachers of the Rajkiya Primary school, Majra, Dehradun for their support in admission of the children in their school.

Findings:

1. Many children of labourers are interested to join the government school, their parents are interested in sending them to school and school teachers are also willing to take these children in their school, but primarily because of difficulty in getting birth certificate from Municipal Corporation for these children, these children are unable to join the school. To open bank account and avail the free school facilities, these children should also Adhar card whose generation again require birth certificate..

2. The problem of getting admission of labourer children in government schools and thus reducing illiteracy in the country can be effectively tackled if people of the society come forward for help and guidance of these people working in their areas. It calls for only moral support and not any financial support.

* ASHA (Accredited Social Health Activist) : An **Accredited Social Health Activist** (**ASHA**) is a community health worker employed by the Ministry of Health and Family Welfare (MoHFW) as a part of India's National Rural Health Mission .

For more details check in internet

अनुबंध 1/ Annexure 1

क्रमांक.	बच्चे का नाम, जन्म की तारीख & कक्षा Child's name, Date of Birth & Class	पिता का नाम, पेशा Father's name & Profession	आधार कार्ड के अनुसार पता Address as per Aadhar Card
1.	प्रियांशु कुमारी (Priyanshu Kumari) 09.06.2016 कक्षा 1 / Class 1	अजय कुमार उराँव, मिस्त्री Ajay Kumar, Uraon, Mason	ग्राम- चरकी, पोस्ट- अधौरा, कैमूर, भभुआ, बिहार-821102 Gram Charki, Post- Adhaura, kaimur, Bhabua, Bihar-821102
2.	संगीता / Sangita 07.08.2018 कक्षा 1 / Class 1	बाबूलाल उराँव / मजदूर Babulal Uraon/ Labourer	s/o छालित्तार उराँव, माधोवला, मार्खम ग्रांट, डोईवाला, देहरादून -241840
3.	जसनीता / Jasnita 15.08.2016 कक्षा 1 / Class 1	बाबूलाल उराँव / मजदूर Babulal Uraon/ Labourer	s/o छालित्तार उराँव, माधोवला , मार्खम ग्रांट , डोईवाला, देहरादून - 241840

राजकीय प्राथमिक विद्यालय, माजरा, देहरादून में दाखिला कराया गया

Admission done in Government Primary school, Majra, Derhadun

प्रियांशी अपने पिता, स्कूल प्रिंसिपल और trainee शिक्षिका के साथ / Priyanshi with her father, school Principal & a trainee teacher

संगीता और जसनिता अपने पिता, स्कूल प्रिंसिपल और trainee शिक्षिका के साथ। प्रियांशु के कुछ महीने बाद इन दोनों का स्कूल में दाखिला हुआ/ Sangeet a and Jasneeta with her father, school Principal & a trainee teacher. They got admission in school few months after Priyanshu

संगीता, जसनीता और प्रियांशु स्कूल यूनिफॉर्म में - अपने निवास स्थान से स्कूल जाने के लिए तैयार हैं / Sangeeta, Jasneeta and Priyanshu in school uniform , ready to go to their school from their

संगीत और जसनीता अपने निवास स्थान के सामने / Sangeet and Jasneeta in front of their house

स्कूल में तीनों लड़कियाँ / Three girls in their school

बच्चे भोजन कर रहे हैं / Children having meal

राजकीय प्राथमिक विद्यालय, माजरा, देरहादून / Government Primary school, Majra, Derhadun

नोट: रिपोर्ट (दिनांक 27.12.20230) में उल्लिखित सभी तीन लड़कियों ने अपनी-अपनी कक्षा की परीक्षा देने के बाद स्कूल छोड़ दिया है, क्योंकि उनके माता-पिता नए काम के लिए अलग-अलग जगहों पर चले गए हैं।

Note: All three girls mentioned in the report (dated 27.12.2023) have left the school, after giving exams for their respective class because their parents shifted away to different sites for new work.

एक रिपोर्ट : मजदूरों के बच्चों की सरकारी स्कूल में एडमिशन के बारे में

(A Report about admission of children of labourers in Govt. School)

Date: 30.07.2024

प्राथमिक राजकीय विद्यालय माजरा, देहरादून में विद्यालय सत्र 2024-25 हेतु दो श्रमिक बच्चों का 23.04.2024 को प्रवेश कराया गया। इन बच्चों के पिता एक बड़ी बिल्डिंग साइट पर काम कर रहे हैं, जिसे पूरा होने में लगभग 5 साल लग सकते हैं, इसलिए इन बच्चों को इस अवधि के दौरान स्कूली शिक्षा मिल सकती है।

विवरण इस प्रकार हैं:

क्रमांक.	**बच्चे का नाम, जन्म की तारीख & कक्षा** **Child's name, Date of Birth & Class**	**पिता का नाम, पेशा** **Father's name & Profession**	**आधार कार्ड के अनुसार पता** **Address as per Aadhar Card of father**
1.	राहुल आदिवासी/ Rahul Adivasi 27.06.2013 कक्षा 1V / Class IV	रामपाल आदिवासी / मजदूर Rampal Adiwasi, Labourer	मध्य प्रदेश Madhya Pradesh
2.	राहुल / Rahul 14.03.2018 कक्षा 1 / Class 1	असानुलाल हरिजन / मजदूर AsanuLal Harijan/ Labourer	भागल, किशनगंज बिहार -855115 Bhagal , Kishanganj, Bihar

राहुल आदिवासी का आधार कार्ड है जिसमें उसकी जन्मतिथि अंकित है। राहुल की जन्मतिथि उनके पिता असानुल लाल हरिजन द्वारा हस्ताक्षरित Affidaavit से ली गई थी क्योंकि उसका आधार कार्ड नहीं है। दोनों बच्चों के पिता के पास आधार कार्ड हैं।

(फोटो: राहुल हरिजन और राहुल आदिवासी, स्कूल के शिक्षकों के साथ दाएं से बाएं)

(Photo: Rahul Harijan and Rahul Adiwasi, left to right with school teachers)

टिप्पणी:

1. दोनों छात्रों ने अपनी कक्षा पूरी किए बिना स्कूल छोड़ दिया। राहुल आदिवासी के माता-पिता काम के लिए दूसरे स्थान पर चले गए जबकि राहुल हरिजन ने अकेले स्कूल जाना बंद कर दिया।

2. सरकारी प्राथमिक विद्यालय में मजदूरों के बच्चों के प्रवेश के लिए, बच्चे का जन्म प्रमाण पत्र या आधार कार्ड अब अनिवार्य आवश्यकता नहीं है क्योंकि राज्य सरकार द्वारा स्कूलों को मजदूरों के प्रति उदार दृष्टिकोण रखने का निर्देश दिया गया है, क्योंकि वे एक प्रवासी समुदाय हैं।

3. चूंकि किसी मजदूर के बच्चे का सरकारी प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश पाना अब आसान हो गया है, सहायता प्रदान करने में रुचि रखने वाले नागरिक स्वतंत्र रूप से पहल कर सकते हैं यदि उनके पड़ोस में छोटे बच्चों के साथ काम करने वाले मजदूर हैं और पास में एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय भी है। प्रवेश नए स्कूल सत्र के खुलने के बाद और संभवतः उस वर्ष के अगस्त महीने तक किया जा सकता है।

Report in English

Two labourers children were admitted in the Primary Governent school, Majra, Dehradun on 23.04.2024 for the school session 2024-25. As father's of these children are working on a big building sites which can take around 5 years for completion, so these kids can get school education for this period. Rahul Adiwasi has aadhar card where his date of birth is indicated. Rahul's date of birth was taken from Addidavit signed by his father, Asanu Lal harijan because he does not have Aadhar card. Father of both children have Aadhar cards.

Details are as given in the Table above:

Note:

1. Both the students left school without completing their class. Parents of Rahul Advisasi shifted to another location for work whereas Rahul Harijan stopped going to the school alone.
2. For admission of labourer's children in government primary school, the birth certificate or Aadhar card of the child is no longer a mandatory requirement as schools have been directed by the state government to have lenient view for the labourers, they being a migratory population.

3. As getting admission of a labourer's child in a government primary school is easier now, citizens interested in providing help can take initiative independently if they have working labourer's with little children in their neighbourhood and a government primary school also nearby. The admission can be done after opening of a new school session and probably up to August month of that year.

तीन रिपोर्टों का सारांश

1. आसान और शायद बेहतर रास्ता यह है कि मजदूर बच्चों को प्राथमिक सरकारी स्कूलों में प्रवेश दिलाने में मदद करने में एक सुविधाप्रदाता के रूप में कार्य किया जाए क्योंकि मजदूर सीधे स्कूल जाने से डरते हैं। इन बच्चों के लिए अब जन्म प्रमाण पत्र और आधार कार्ड की बंदिशें खत्म होने से दाखिले की प्रक्रिया अब आसान हो गई है। निर्माण के शुरुआती चरण में ही बच्चों को प्रवेश दिलाना फायदेमंद है ताकि उन्हें स्कूल में लंबे समय तक रहने का मौका मिल सके।

2. यदि उपरोक्त संभव न हो तो समाज के कर्तव्यनिष्ठ लोग छोटे समूहों में इन बच्चों को हिंदी/गणित की बुनियादी शिक्षा दे सकते हैं ताकि किसी शिक्षण सदस्य की अनुपस्थिति में निरंतरता बनी रहे। बच्चों को प्रतिदिन सीखने के लिए आकर्षित करने के लिए कक्षा के अंत में बच्चों को बिस्कुट/स्नैक्स का प्रावधान किया जाना है।

3. ट्रस्ट बातचीत और प्रस्ताव के अध्ययन के बाद बिंदु 2 के लिए सहायता और कुछ मौद्रिक सहायता प्रदान कर सकता है।

Summing up of the three Reports

1. The easier and probably better route is to act as a facilitator in helping labourer children in getting admission in primary government schools as labourers are fearful to approach school directly. As restrictions of birth certificate and Aadhar card is no longer there for these children, the process of admission is now easy. It is beneficial to admit children at early stage of construction so that they get a longer stay in the school.

2. If above is not possible then conscientious people of society in small groups can take up basic teaching of Hindi/maths to these children so that continuty is maintained in absence of any teaching member. Provision of biscuits/snacks to children at the end of class is to be made to lure children to come daily for learning.

3. Trust can provide support and some monetary help for point 2 after interaction and study of proposal.